ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.2, April – June,2024/54

''महिला उद्यमिता एवं नेतृत्व''

प्रगति शुक्ला, शोधार्थी (समाजशास्त्र), के0 एस साकेत पी0 जी0 कॉलेज, अयोध्या
डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
https://doi.org/10.61410/had.v19i2.190

सारांश –

हमारी सनातन परंपरा में भारतीय नारी को शक्ति स्वरूपा व शक्ति का पुंज माना गया है। अतः स्त्री की शक्ति को चिन्हित करके ही भारत में सदा स्त्रियों को नमन किया गया और महिलाओं को आर्थिक, शैक्षिक तथा भावनात्मक रूप से सजग व स्थिर बनाने का प्रयास सदैव किया गया। सन् 1991 में महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रमों में महिलाओं को प्रशिक्षण व प्रोत्साहन देने का कार्य बहुत तेजी से बढ़ा, जबकि 1974 से 1978 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया जा चुका था। हालांकि भारत में अभी भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं की उद्यम क्षेत्र में सहभागिता कम है। कारण आज भी पितृसत्तात्मक समाज, उत्पादन लागत उच्च, आर्थिक समस्याएं, यात्राएं आदि भेद–भाव जैसी कई समस्याएं समाज में उपस्थित हैं। वर्तमान सरकार भी उद्यमी महिलाओं के लिए सकारात्मक परिवर्तन के साथ–साथ निरन्तर वृद्धि कर रही है जिससे समाज की संरचना में परिवर्तन हो रहा है। अगर बात नेतृत्व की की जाए तो आज महिलाएं फैशन, डिजाइन, इलेक्ट्रॉनिक, सूचना, संचार, ट्रैवेल्स, ऑटोमोबाइल्स आदि में आगे जा रही हैं। उद्योग व्यापार में अनेकों महिलाओं ने अपना परचम समाज में लहराया है, जैसे – इंदु जैन, इंदिरा नुई, किरण मजुमदार, नीलम धवन, चन्दा कोचर आदि। देश की आधी आबादी के रूप में पहचानी जाने वाली महिलाएं विकसित भारत की आधारशिला हैं, यह कहना अनुचित नहीं होगा।

मुख्य शब्द – महिला, उद्यमशीलता, नेतृत्व, योजनाएं।

प्रस्तावना –

उद्यमशीलता की अवधारणा 19वीं शताब्दी में प्रकाश में आयी विशेषकर 'महिला उद्य मी' जबकि उद्यमिता के विकास का प्राकट्य प्राचीन भारत से ही शुरु हो गया था। प्राचीन काल से ही महिलाओं की नीतियां प्रत्येक क्षेत्र में कारगर थी। बात अगर 18वीं सदी की की जाए तो महिलाएं उद्यम के क्षेत्र में कम देखी गयी हैं परन्तु 19वीं तथा 20वीं सदी में महिलाओं ने उद्यमिता के क्षेत्र में बढ़कर हिस्सा लिया। खासकर 20वीं सदी में व्यवसायी महिलाओं की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी नजर आयी तथा सृजनशीलता देखी गयी। भारत सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार 'महिलाएं विशेष रूप से एक महिला द्वारा संचालित लघु उद्योग शुरु करती हैं। 1995–96 के बीच में कुल 2.64 मिलियन उद्यमियों में से 11.2% का दावा करने वाली 2,85,680 से अधिक व्यवसायी महिलाएं हैं। जैसे–जैसे शहरीकरण बढ़ रहा है वैसे–वैसे महिला उद्यमिता में वृद्धि हो रही है। आर्थिक विकास में महिलाओं की स्थिति सराहनीय है। पहले की अपेक्षा महिलाओं की स्थिति मे अतुलनीय बदलाव आया है। वे घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर बड़े–बड़े उद्योगों व्यवसायों में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। 1991 में (L.P.G.) उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण की शुरुआत हुई जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था में भारी बदलाव आया जिसके कारण महिला उद्यमियों को भी वरीयता मिल रही है। जैसा कि उद्यमिता की परिभाषा से काफी कुछ स्पष्ट हो जाता है, कुछ परिभाषाएं इस प्रकार हैं – पीटर एफ ड्रकर – 'उद्यमी वह व्यक्ति है जो सदैव परिवर्तन की खोज करता हैं।' जोसेफ शुम्पीटर के अनुसार – 'उद्यमिता एक नवप्रवर्तनकारी कार्य है। यह स्वामित्व की अपेक्षा एक नेतृत्व कार्य है।'

'महिला उद्यमी वे महिलाएं हैं जो किसी व्यावसायिक गतिविधि का आविष्कार करती हैं, आरम्भ करती हैं व अपनाती हैं।'

भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार – 'एक महिला उद्यमी को एक महिला के स्वामित्व और नियन्त्रण वाले उद्यम के रूप में परिभाषित किया गया है जिसकी पूंजी ने न्यूनतम 15% वित्तीय सहायता हित है जो उद्यम में उत्पन्न कम से कम 81% महिलाओं को देती है।'

फ्रेडरिक हर्विसन – 'कोई भी महिला या महिलाओं का समूह जो किसी आर्थिक गतिविधि का नवाचार करता है, आरम्भ करता है या अपनाता है उसे महिला उद्यमिता कहा जा सकता है।'

अगर हम संक्षिप्त रूप से कहें तो वे महिलाएं उद्यमी महिलाएं कहलाती हैं जो किसी भी व्यावसायिक उद्यम के बारे में विचार करती हैं और उत्पादन कारकों का संगठन बनाती हैं और उसको संयोजित करती हैं और स्वयं उद्यम का संचालन करती है, कई रिस्क उठाती है।

भारत में महिला उद्यमिता का तेजी से आने का कारण है आर्थिक प्रगति, शिक्षा तक बेहतर पहुँच, शहरीकरण, उदार और लोकतांत्रिक संस्कृति का प्रसार और बदलता हुआ सामाजिक परिवेश आदि। पूरी दुनिया में उद्यमशीलता में एक तिहाई से अधिक उद्यम महिला उद्य मियों द्वारा चलाए जाते हैं। देखा जाए तो महिला उद्यमियों के प्रोत्साहन बढ़ाने की, तो भारत में विशेष प्रोत्साहन और अभियान बनाए गये हैं, जैसे स्टार्टअप इण्डिया और स्टैंडअप जैसी योजनाओं ने भी महिलाओं को सशक्त करने में व उद्यम क्षेत्र में उभर कर सामने आने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। अमेरिका में 20वीं और 21वीं सदी के दौरान महिला उद्यमिता पूरी दुनिया में देखी गयी तत्पश्चात भारत ने भी महिला उद्यमिता में अपना नाम रोशन किया। भारत की पहली महिला उद्यमी कल्पना सरोज हैं, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण में कहा गया कि भारत में कुल उद्यमियों में से 13.76ः महिलाएं हैं।

रूहानी जे0 एलिस के अनुसार 'महिला उद्यमिता एक उद्यम की इक्विटी और रोजगार में महिलाओं की भागीदारी पर आधारित है।

उद्देश्य –

1) महिला उद्यमिता के बारे में जानकारी प्राप्त करके नवोन्मेषी पहलुओं का अध्ययन करना।

2) उद्यम में महिला उद्यमियों के नेतृत्व के विषय का अध्ययन करना।

3) महिला उद्यमियों को प्रभावित करने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जो समाचार पत्र, पुस्तक, पत्रिकाएं, शोध आलेख व इंटरनेट के प्रयोग पर आधारित है।

महिला उद्यमिता क्षेत्र –

जब भारत स्वतंत्र हुआ तो महिला उद्यम के क्षेत्र में भोजन, फल, सब्जियाँ, फल अचार, होजरी, सिलाई जैसे पारम्परिक क्षेत्र में थीं परन्तु वर्तमान में यह व्यापक हो गया है जैसे – हस्तशिल्प, इलेक्ट्रॉनिक्स, रसायन तकनीकी आदि में। आज सूचना प्रौद्योगिकी ऐसा माध्यम बन गया है जिसने प्रत्येक कार्य को आसान बना दिया है, इसका लाभ महिला उद्यमी को भी पूर्णतः मिल रहा है जिससे

एक जगह बैठकर पूरे विश्व की कार्यव्यवस्था की जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। यहाँ पर 'मार्शल मैक्लूहन' की अवधारणा 'वैश्विक ग्राम' बिल्कुल सत्य प्रतीत होती है।

भेदभाव या समस्याएं –

महिला उद्यमियों पर किये गये अध्ययन से पता चलता है कि प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को असमानता का तथा सामाजिक रूढ़िवादिता का सामना करना पड़ता है। समाज में ग्राहकों से लेकर, आपूर्तिकर्ता तथा बैंकों के व्यावसायिक संबंध उन्हें बताते हैं कि वे अलग हैं। 2012 का मुकदमा क्लिनर पार्किंस कफिल्ड एण्ड वायर्स के खिलाफ लैंगिक भेदभाव के लिए किया गया।

आर्थिक, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, पारिवारिक समस्या आदि कई समस्यायें महिला उद्यमी को व्यवसाय संचालन में होती है। महिला उद्यमियों को बड़ी मेहनत से यह विचार करना पड़ता होगा कि वे किस प्रकार अपने उद्यम को एक नवीन आकार दे सकें क्योंकि समाज का रवैया तो पुरुषोन्मुखी है, अब बात उनके विचार तक ही नहीं रहती बल्कि असल में समस्या यह है कि यह विचार (स्थान) पुरुष प्रधान है। यहाँ महिला उद्यमी को कई चीजों का सामना करना पड़ता है, जैसे – गतिशीलता, समय, फंड्स, सक्रियता। इन सबके बीच पारिवारिक तालमेल के साथ जद्दोजहद उनकी खुद की देखी गयी है। एक महिला उद्यमी को अपने आप को दोहरी कसौटी में कसना होता है – घर और बाहरी दुनिया।

भारत सरकार द्वारा चलायी गयी योजनाएं –

पहले की अपेक्षा भारत में महिला उद्यमिता में बढ़ोत्तरी देखी गयी है। महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने समय–समय पर विभिन्न योजनाएं

शुरु की हैं –

1) अन्नपूर्णा योजना

2) महिला उद्यमी योजना

3) महिला उद्यम निधि योजना

4) महिलाओं के लिए व्यापार संबंधी उद्यमिता सहायता और विकास योजनाएं

5) महिला सम्मान बचत पत्र योजना

6) प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी)

7) स्टैण्ड अप इंडिया योजना

8) मुद्रा ऋण सरकार के द्वारा चलाई जाने वाली इन योजनाओं का पूर्ण लाभ उठाकर महिलाएं उद्यम के क्षेत्र में अपना बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं। इन्हें उद्यम के क्षेत्र में सरकार व बैंकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है जिससे ये समाज में उद्यम के क्षेत्र में नवोन्मेषिता की ओर अग्रसर हो पायें। भारत में जहां 15.7 मिलियन से अधिक महिलाएं उद्यमी हैं और महिलाएं ही शुरुआत करके पूरे तंत्र (पारिस्थितिकी) को चला रही हैं। जिस तरह से वृद्धि हो रही है अनुमान है कि यह आंकड़ा पाँच वर्षों में कई गुना आगे चला जाएगा। वर्तमान में हमारे देश में पाँच करोड़ से अधिक उद्यमी हैं लेकिन उनमे केवल 14% महिलाएं हैं। ऐसे में महिला उद्यमिता को

बढ़ावा देने के लिए सभी तरह से प्रयास किया जा रहा है। राज्य के साथ–साथ केन्द्र सरकार द्वारा भी कई योजनाएं चलाई जा रही हैं।

उद्यम में महिला नेतृत्व का विकास –

महिला उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं के नेतृत्व का विकास – यह विकास के दृष्टिकोण को दृष्टिगत करता है। महिलाओं के नेतृत्व पदों के लिए प्रत्यक्ष देते देखना एक दुर्लभ दृश्य है जहाँ उनकी मानसिकताएं या विचार संकुचित हो जाते हैं क्योंकि प्राथमिकता वे बैंक, ऑफिस आदि की भूमिकाओं में सहज महसूस करती हैं, कुछ क्षेत्र जिन्हें पुरुषों का ही माना जाता है यह एक सामाजिक व सांस्कृतिक मुद्दा हो सकता है। इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

महिला उद्यमिता दिवस प्रत्येक वर्ष 19 नवम्बर को मनाया जाता है। उद्यमशील क्षेत्र में महिलाओं की सफलता के लिए उनमें निम्नलिखित गुण होने चाहिए –

1) दृढ़ निश्चय – किसी भी महिला उद्यमी का सबसे पहला गुण दृढ़ निश्चयता होती है। जब कोई भी महिला उद्यमी अपने उद्यम को पूर्ण विश्वास के साथ अपनी प्रतिष्ठा व सम्मान का विषय दृढ़ निश्चय करके बना लेती है तो समाज उसे स्वीकार करने लगता है।

2) शिक्षित एवं सामर्थ्यवान – किसी भी महिला उद्यमी में शिक्षा एवं सामर्थ्य एक मौलिक गुण की श्रेणी में आता है।

3) कैरियर उन्मुखी – महिलाओं में अक्सर देखा गया है कि वे अपने कैरियर के प्रति बहुत जिम्मेदार होती हैं और उनको अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कैरियर के प्रति जागरूक होकर पुरुष के समान सजग बने।

4) दूरदर्शिता – उद्यम के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण गुण दूरदर्शिता होता है। महिला उद्यमी अपने कार्य क्षेत्र में क्या होने वाला है? उससे क्या फायदा होगा? आदि सभी की जानकारी उनमें दूरदर्शिता से आती है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उद्यमिता किसी भी देश में सामाजिक व आर्थिक विकास की प्रक्रिया में एक आधारभूत तत्व है। 20वीं व 21वीं सदी की महिला उद्यमी अपने आप में एक मिसाल है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी में 48.5% महिलाएं हैं। वर्तमान समय में भारत में बहुत सारी एजेंसियाँ जो सरकारी व गैर सरकारी हैं महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में आकर्षित कर रही हैं। महिलाओं के लिए उद्यमिता तथा नवाचार एक बहुत बड़ा अवसर है। जहाँ महिलाओं को उनके पारिवारिक काग्र व सहनशीलता के लिए जाना जाता था परन्तु आज महिलाएं उद्यमिता के क्षेत्र में बढ़ चढ़ कर अपना परचम लहरा रही हैं। अपनी क्षमताओं को उपयोग करके नवीन व्यवसायों को निर्मित करने व समाज को उन्नतशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। जैसा कि सभी जानते हैं कि महिलाओं के लिए यह चुनौतीपूर्ण है परन्तु सरकार की योजनाओं ने उनके कार्यक्षेत्र को सहज बनाया है।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. 'भारत में महिला उद्यमिता', आईबीईएफ, 8 मार्च 2021 https://www.ibef.org/ industry/ entrepreneurship.aspx.

2. 'भारत में महिला उद्यमी : अवसर, चुनौतियाँ और आगे का रास्ता', नीति आयोग, भारत सरकार, मार्च 2020, https://niti.gov.in/women-entrepreneurs-indiaopportunities-challenges-and-way-forward.

3. 'महिला उद्यमिता : लिंग अंतर को बंद करना', ओईसीडी, 2019, https:// www.oecd.org/cfe/ smes/ womens-entrepreneurship-2019.htm.

4. अग्रवाल, आर.सी., 2007, उद्यमिता एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन्स, आगरा

5. Sharma, Dr. Ranjana, "Women entrepreneurs ub India, ISSN : 2230-9926.

6. Lakshmi, C.S., 2002, "Development of women inrepreneurship in India', Discover Publishing House, New Delhi.

7. संजय कांति दास, (2012), ''इन्टरप्रेन्योरियन एक्टिविटीज ऑफ सेल्फ हेल्प ग्रुप्स टुवर्ड्स विमेन एंपावरमेंट'' जनरल ऑफ इन्टरप्रेन्योरशिप मैनेजमेंट।

8. Dr. G. Malyodri (2014) "Role of women entrepreneurs in the Economic Development of India".

9. इंटरनेट से प्राप्त जानकारी के आधार पर।